B.A-II Hons.
24/4/20

Dr Kumari Hanuk
H.O.D. ECONOMICS
R.N. College
Hajipur

सार्वजनिक व्यय में वृद्धी के कारण :→

विश्व के विभिन्न देशों में सार्वजनिक व्यय के आकड़ों यदि देखा जाए तो पता चलता है कि पिछले कई वर्षों से सार्वजनिक व्यय में लगातार वृद्धी हुई है। सार्वजनिक व्यय में वृद्धी की यह प्रवृती कि 19वी शताब्दी में ही प्रारंभ हुई लेकिन 20वी शताब्दी में इसका विस्तार अधिक हो गया सार्वजनिक व्यय की इस अप्रत्याशित वृद्धी को देखकर प्रो० शिवराज ने कहाँ था

"In short the twenteeth Century has witneshed public expenditure to a degree which want have been regarded us ever some years ago Want have been regarded us Sumptamali of financial madness and Creation Collapse of World Credit."

आधुनिक युग में न केवल व्यय के द्वारा अपने परमपरागत दायित्वों को पुरा करती है बल्कि इसका प्रयोग आर्थिक स्थिरता: बेरोजगारि उन्मुलन तथा विकास एवं नियमन के लिए किया जाता है।

सार्वजनिक व्यय में वृद्धी के कारणों का अध्ययन निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत किया गया है।

P.T.O.

1. युद्ध एवं युद्ध की तैयारी :->

२० वी शताब्दी में सार्वजनिक व्यय में वृद्धी का एक महत्वपुर्ण कारण युद्ध एवं युद्ध के तैयारी पर किया गया व्यय हैं। आप सुरक्षा की तैयारी के लिए हथियारों वैज्ञानिक उपकरणों अनुसंधानों इत्यादी पर व्यय किया जा रहा हैं। जो बहुत ही खर्चीला हैं।

२. राज्यों के क्षेत्रफल :-> और जनसंख्या में वृद्धी :->
विगत वर्षों में सम्पुर्ण धरातल किसी न किसी देशों के प्रशासन के अन्तर्गत आ गया हैं। जिससे राज्य की सिमिया का विस्तार हुआ हैं। आज विश्व के लगभग सभी देशों की जनसंख्या में तेजी से वृद्धी हो रही हैं। जनसंख्या में जिस अनुपाता में वृद्धी होती हैं। सार्वजनिक व्यय में भी स्वभावत: उसी अनुपात में वृद्धी होगी इस बढती हुई जनसंख्या की विभिन्न आवश्यकताओं को पुरा करने के लिए प्रत्येक देश की सरकारो को अब पहले से ज्यादा धन खर्च करना पर रहा हैं।

3. आंतरीक सुरक्षा एवं प्रशासन :->
आर्थिक विकास के साथ साथ आय के वितरण में असमानता आयी हैं। जिससे पुरानी व्यवस्था टूट गई और सामाजिक तनाव की स्थिती देखने में आती हैं। तनाव तथा वंचक की इस अवस्था में समाज में अपराध की स्थिती में वृद्धी होती हैं। महानगरो एवं
4. शहरी इलाको में गन्दी बस्तियो में भी अपराध की प्रवृती को बढावा दिया हैं। इस कारण अपराध नियंत्रण तथा न्याय व्यवस्था बनाये रखने पर भी राजकिय व्यय में व्यय में वृद्धी हुई हैं।

4. सामूहिक वस्तुओं पर व्यय:->
शास्त्रीय चिन्तक की समाजिक संरचना जैसे- पथ - निर्माण जल विद्युत आपुर्ती तथा शिक्षा आदी को राजकिय दायित्व मानते थे क्योंकी इनकी व्यवस्था सामुहिक हित में बिना प्रत्यक्ष मौद्रिक लाभ की प्रवृती से हुती हैं। विशेषकर स्वाभाविक एकाधिकार का नियंत्रण सरकार के ही हात मे देना अधिक उपयोगी समझा जाता हैं। इन सेवाओं मे पिछले 50 वर्षों में तकनिकी एवं परिवर्तन जनसंख्या में वृद्धी तथा उत्पादन की संरचना में सुधार के कारण भारी विस्तार हुआ हैं।

1.70

5. जीवन स्तर में वृद्धी :→
आज आधुनिक तकनीक एवं यंत्रीकरण के सहयोग से सभी देशों के उत्पादक एवं राष्ट्रीय में वृद्धी हुई है। इससे लोगों के रहन सहन के स्तर में सुधार हुआ है। किन्तु सरकार जनहित के लिए पहले की अपेक्षा अधिक रकम खर्च करने के लिए बाध्य हो गई है इससे सार्वजनिक व्यय में वृद्धी अनिवार्य है।

6. प्रजातंत्र का विकास :→
प्रजातंत्र एवं प्रजातांत्रिक संस्थाओं के विकास ने भी सार्वजनिक व्यय में वृद्धी की है। प्रजातंत्र में जनता के प्रतिनिधियों द्वारा शासन होता है। अतः विधान सभाओं, विधान परिषदों एवं संसदो पर काफी खर्च करना पड़ता है। विदेशों में राजनीतिक प्रतिनिधियों को भेजने तथा विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के सदस्य होने के नाते भी व्यय करना पड़ता है।

7. आर्थिक नियोजन :-
समाजवादी देशों में योजनाकरण की सफलता के कारण अन्य देशों ने भी आर्थिक नियोजन का मार्ग अपनाया है। इन योजनाओं पर सरकार को बहुत बड़ी राशी खर्च करनी पड़ती है। इससे सरकार के व्ययों में वृद्धी हुई है।

8. मूल्य स्तर में वृद्धी :→
प्रायः सभी देशों में मूल्य स्तर की वृद्धी सार्वजनिक व्यय में वृद्धी का एक प्रमुख कारण है। दो व्यय में विश्वयुद्ध के चलते मूल्य काफी बढ़े किन्तु मूल्यों की तेजी रफ्तार 1939 के बाद ही शुरू हुई वर्तमान समय में भी सभी अर्थव्यवस्था विशेषकर, अविकसित देश, बढ़ते हुए मूल्यों की समस्या से आक्रांत है। जिस प्रकार वस्तुओं के मूल्य बढ़ने से किसी व्यक्ति को अपनी खरीद की वस्तुओं पर अधिक खर्च करना पड़ता है। उसी प्रकार मूल्यों के बढ़ने से सरकार को भी अधिक खर्च करना पड़ता है। इस प्रकार मूल्य स्तर की वृद्धी ने सार्वजनिक व्यय को बढ़ा दिया है।

9. उद्योगों का राष्ट्रीकरण :→
आधुनिक समय मे जिन राज्यों ने विदेशी गुलामी से मुक्ति पायी है। उनमे प्रायः समाजवादी समाज की स्थापना पर जोर दिया जा रहा है।

P.T.O.

इसके लिए सरकार दिन प्रतिदिन उद्योगों का राष्ट्रीकरण कर रही है। इससे उन उद्योगों को चलाने तथा राष्ट्रीकरण के समय सुविधाएं देने का व्यय बढ़ता जा रहा है। सरकार कुछ महत्वपूर्ण एवं बड़े उद्योगों का संचालन स्वयं कर रही है। इन सब कारणों से सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हुई है।

10. सामाजिक सुरक्षा :→
देशों के सरकार अपने नागरिकों की दुर्घटना बीमारी, बेरोजगारी आदी में आर्थिक सहायता प्रदान करवाती है। वह सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा उनके लिए विभिन्न जीवनोपयोगी आदि की भी व्यवस्था करती है। इन महत्वपूर्ण सेवाओं के संचालन से सार्वजनिक व्यय बढ़ता जा रहा है।

11. अंतरराष्ट्रीय संगठनों का प्रभाव :→
आज विश्व में कई अन्तरराष्ट्रीय संगठन कार्यशील हैं जिनकी सदस्यता ग्रहण करने पर राज्यों को उनके द्वारा निर्धारित दायित्वों का पालन करना पड़ता है। इससे सरकारी व्ययों में वृद्धि होती है।

12. विकेन्द्रीकरण :→
प्रजातांत्रिक देशों में आधुनिक प्रवृत्ति है। राजनैतिक एवं आर्थिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण किया जाए ताकी जनता देश के विकास के साथ अत्यधिक मात्रा में अपने को संबंधित कर सके इसके लिए विभिन्न स्तरों पर कई प्रकार की योजनाओं एवं समस्याओं की शुरूआत की गई है। जिसमें काफी संख्या में अधिकारीयों एवं कर्मचारियों की नियुक्ती की गई है। इसके फलस्वरूप सरकार के सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हुई है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिक समय में उपयुक्त कारणों से सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हुई है। इसका प्रमुख कारण राज्य के कार्यों में वृद्धि है।

Scanned with CamScanner